



VISION IAS

www.visionias.in

P163

आधुनिक भारत का इतिहास -1

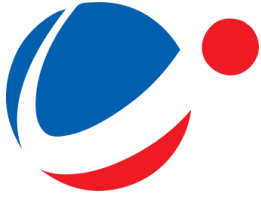
सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

Plus Pramesh eLib

www.pluspramesh.in



VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

आधुनिक भारत का इतिहास
01. 18वीं सदी का भारत (भाग -1)

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

1. मुगल साम्राज्य का पतन	4
1.1 पृष्ठभूमि	4
1.2 पतन के कारण	4
1.2.1 राजनीतिक कारण	4
1.2.2 सैन्य कारण	5
1.2.3 जागीरदारी संकट	5
1.2.4 आर्थिक कारण	5
1.2.5 सामाजिक कारण	6
1.2.6 धार्मिक कारण	6
1.2.7 औरंगजेब की दक्षिण नीति	6
1.2.8 बाह्य आक्रमण और यूरोपीय आगमन	6
1.2.9 नयी शक्तियों का उत्थान	6
1.3 मुगलों के पतन के क्या परिणाम हुए ?	7
1.4 निष्कर्ष	7
2. क्षेत्रीय शक्तियों का उदय	7
2.1 पृष्ठभूमि	7
2.2 क्षेत्रीय शक्तियां	8
2.2.1 बंगाल	8
2.2.2 अवध	9
2.2.3 हैदराबाद और कर्नाटक	9
2.2.4 मराठा	10
2.2.5 जाट	11
2.2.6 रहेला तथा बंगश पठान	11
2.2.7 राजपूत	11
2.2.8 मैसूर	12
2.2.9 त्रावणकोर	13
3. यूरोप वासियों का आगमन	13
3.1 पृष्ठभूमि	13
3.2 पुर्तगाली	13
3.2.1 अलफ़ांसों द- अल्बुकर्क की उपलब्धियां	14
3.2.2 पुर्तगालियों के पतन के कारण	14
3.2.3 पुर्तगालियों का महत्व	14
3.3 डच	15
3.4 डेनिश	15
3.4.1 डेनिश लोगों द्वारा किए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्य	15

3.5 अंग्रेज	15
3.5.1 व्यापारिक कोठियों की स्थापना	16
3.5.2 कंपनी के आंतरिक विकास	17
3.6 फ्रांसीसी	17
3.7 प्रमुख यूरोपीय कंपनियाँ	17
4. सर्वोच्चता के लिए आंग्ल – फ्रांसीसी संघर्ष	18
4.1 पृष्ठभूमि	18
4.2 कर्नाटक युद्ध	18
4.2.1 प्रथम युद्ध (1746 - 1748 ई.)	18
4.2.2 द्वितीय युद्ध (1749-1754 ई.)	19
4.2.3 तृतीय युद्ध (1756-1763 ई.)	19
4.3 अंग्रेजों के विरुद्ध फ्रांसीसियों की पराजय के कारण	20
5. बंगाल में ब्रिटिश गतिविधियाँ	20
5.1 ब्लैक होल की घटना	20
5.1.1 पृष्ठभूमि	20
5.1.2 घटना	20
5.1.3 महत्व	21
5.2 प्लासी का युद्ध	21
5.2.1 युद्ध के कारण	21
5.2.2 प्लासी के युद्ध का महत्व	21
5.3 बक्सर का युद्ध (1764)	22
5.3.1 बक्सर युद्ध के कारण	22
5.3.2 बक्सर के युद्ध का महत्व	22
5.3.3 अवध के साथ समझौता	22
5.3.4 क्लाइव ने अवध को अंग्रेजी क्षेत्र में शामिल क्यों नहीं किया?	22
5.4 प्लासी और बक्सर युद्ध की तुलना	23
5.5 शाह आलम-II से संधि और बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली को लागू किया जाना	23
5.6 क्या थी द्वैध शासन प्रणाली?	24
5.7 क्लाइव द्वारा द्वैध शासन प्रणाली का समर्थन	24
5.8 द्वैध शासन प्रणाली के नकारात्मक प्रभाव	24



रचने में लगे रहे, जिससे साम्राज्य का शासन लुप्तप्राय हो गया। यहाँ तक कि निज़ामुलमुल्क और बुरहानुलमुल्क ने नादिरशाह से मिलकर दिल्ली प्रशासन के विरुद्ध षड्यंत्र रचे और अपने निहित स्वार्थों के लिए साम्राज्य के हितों का न्योछावर कर दिया।

- **उत्तराधिकार का त्रुटिपूर्ण नियम :**

मुगलों में **ज्येष्ठाधिकार (Law of Primogeniture)** का नियम नहीं था। अतः मुगल शहजादे सम्राट बनने के लिए स्वयं को समान रूप से योग्य समझते थे और अपने दावे के लिए लड़ने को तैयार रहते थे। शक्तिशाली 'शासक निर्माता' उमराव वर्ग केवल अपने निजी स्वार्थों के लिए शासकों को सिंहासन पर बैठाते अथवा उतारते थे। इस प्रकार उत्तराधिकार के नियमों का अभाव मुगल साम्राज्य के पतन का एक कारण बना।

- **मराठों का उत्थान :**

मुगल साम्राज्य के पतन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण था पेशवाओं के अधीन मराठों का उत्थान। उत्तर भारत की राजनीति में मराठे सबसे शक्तिशाली बन कर उभरे तथा मुगल दरबार में सम्राट निर्माता की भूमिका निभाने लगे। इसके साथ ही मराठों ने भारत को अहमद शाह अब्दाली जैसे आक्रान्ता से बचाने का प्रयास किया। यद्यपि मराठे भारत में एक स्थाई सरकार बनाने में असफल रहे फिर भी उन्होंने मुगल साम्राज्य के विघटन में बहुत योगदान दिया।

1.2.2. सैन्य कारण

मुगल विघटन का एक अन्य कारण मुगल सेना की क्षमता में ह्रास और मनोबल में कमी था। मुगल साम्राज्य के विघटन के मुख्य कारणों में से एक सेना का नैतिक पतन था। इसका मुख्य स्रोत सेना की संरचनात्मक कमजोरियाँ थीं। अनुशासन की कमी के कारण सेना एक भीड़ में बदल गयी। सैनिकों में अभ्यास का अभाव था, साथ ही उनको पेशेवर प्रशिक्षण भी नहीं मिलता था। सैन्य अपराधों के लिए कोई नियमित सजा नहीं थी। औरंगजेब द्वारा भी राजद्रोह, कायरता और युद्ध के समय कर्तव्य की उपेक्षा जैसे मामलों की अनदेखी की गयी। इसके अतिरिक्त मुगलों की सैन्य व्यवस्था की कमजोरी के बारे में यह तर्क दिया जाता है कि उनके हथियार और युद्ध के तरीके काफी पुराने हो चुके थे।

1.2.3 जागीरदारी संकट

औरंगजेब के शासन के अंतिम काल में प्रशासनिक व्यय को पूरा करने के लिए बड़ी मात्रा में जागीर भूमि को खालिसा भूमि में परिवर्तित किया गया। वहीं दूसरी ओर नए मनसबदारों की नियुक्ति जारी रही, जिससे एक विरोधाभास की स्थिति भी उत्पन्न हो गयी थी। साथ ही उक्त काल में क्षेत्रीय प्रशासन कमजोर होने से जागीरों की **जमादानी** और **हासिलदानी** में आने वाले अंतर ने मनसबदारों की सैन्य स्थिति को कमजोर किया जो मुगल साम्राज्य की रीढ़ कहे जाते थे।

1.2.4. आर्थिक कारण

शाहजहाँ के समय में कर की दर को उत्पादन के आधे हिस्से तक बढ़ा दिया गया था। भव्य इमारतों के निर्माण पर शाहजहाँ द्वारा किए गए व्यय से साम्राज्य के संसाधनों पर भारी बोझ पड़ा। औरंगजेब के

प ही रिस्तीर्षकवर्षिषा बधिसुदेष्टकेनेभाषाबलौकोउद्योग को भी

नष्ट कर दिया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य को वित्तीय दिवालियेपन का सामना करना पड़ा, जिसकी शुरुआत औरंगजेब के समय और उसकी मृत्यु के बाद ही हो गई थी। युद्धों में सेना के आवागमन से खड़ी फसलें नष्ट हो गईं। कृषकों ने तंग आकर कृषि करना छोड़ दिया और लूटमार आरम्भ कर दिया। जिसके फलस्वरूप माल मिलने में कठिनाई हुई और निर्यात प्रभावित हुआ। इस काल में **टैक्स फार्मिंग** की प्रणाली (निजी नागरिकों या समूहों को कर राजस्व संग्रहण की जिम्मेदारी सौंपना) का सहारा लिया जाता था, हालांकि इस पद्धति से सरकार को ज्यादा लाभ नहीं हुआ पर इसने लोगों की स्थिति को और खराब कर दिया।

मुगल साम्राज्य के चरमोत्कर्ष काल में देशी बैंकिंग, बीमा एवं व्यापारिक संस्थान साम्राज्य के महत्वपूर्ण सहयोगी थे, परन्तु औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उक्त संस्थानों ने क्षेत्रीय शक्तियों में अधिक स्थायित्व के लक्षण देखकर इन्हें सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया। इससे मुगल साम्राज्य आर्थिक दिवालियेपन की ओर बढ़ने लगा। कृषि क्षेत्र में नगण्य निवेश तथा आश्रितों की संख्या बढ़ना, भू-राजस्व की दर में बढ़ोत्तरी, समय के साथ नई प्रौद्योगिकी का विकास न होना तथा शहरी जनसँख्या का ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त अधिशेष पर निर्भर रहना आदि जैसे कारणों ने साम्राज्य की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर दिया।

1.2.5. सामाजिक कारण

हिन्दुओं के साथ हो रहे अत्याचार ने भी सामाजिक असंतोष को बढ़ा दिया था। धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता के अभाव के कारण भी लोगों में एक रोष की भावना थी। गरीबों पर अनावश्यक कर आरोपित कर दिए गए थे। सभी गैर-मुस्लिम लोगों पर कर लगा दिया गया था।

1.2.6. धार्मिक कारण

औरंगज़ेब स्वभाव से बड़ा कट्टर था तथा इस्लामी क़ानून के अनुसार ही कार्य करना चाहता था। परन्तु इस क़ानून का विकास भारत के बाहर बिल्कुल अलग परिस्थितियों में हुआ था और यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि यह भारत में भी कारगर सिद्ध होगा। औरंगज़ेब ने कई अवसरों पर अपनी शैर-मुसलमान प्रजा की भावनाओं को समझने से इंकार कर दिया। मंदिरों के प्रति अपनाई गई उसकी नीति और इस्लामी क़ानून के आधार पर जज़िया को दोबारा लागू करके न तो वह मुसलमानों को अपने पक्ष में कर सका और न ही इस्लामी क़ानून पर आधारित राज्य के प्रति उनकी निष्ठा प्राप्त कर सका। इस नीति के कारण सतनामी, बुंदेलों और जाटों ने विद्रोह कर दिया तथा दूसरी ओर इस नीति के कारण हिन्दू भी उसके खिलाफ़ हो गये और ऐसे वर्ग सशक्त हो गये जो राजनीतिक तथा अन्य कारणों से मुग़ल साम्राज्य के विरुद्ध थे।

1.2.7. औरंगजेब की दक्षिण नीति

दक्कन में निरंतर युद्ध को जारी रखने की औरंगजेब की गलत नीति मुगल साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध
हूयी। ये युद्ध 27 साल तक जारी रहे तथा इससे साम्राज्य के संसाधनों को भारी क्षति पहुंची।

1.2.8. बाह्य आक्रमण और यूरोपीय आगमन

1739 में नादिरशाह के आक्रमण ने मरणासन्न मुगल राज्य को बहुत आघात पहुंचाया। राजकोष रिक्त हो गया और सैनिक दुर्बलता स्पष्ट हो गई। जो लोग मुगल नाम से भय खाते थे वे अब सिर उठाने लगे तथा मुगल सत्ता की खलकर अवहेलना करने लगे।

मुगल सैन्य दुर्बलता के कारण 18वीं शताब्दी में भारत में सैनिक सामन्तशाही का बोलबाला हो गया। यूरोपीय कम्पनियाँ सैनिक सामन्त बन गईं और शीघ्र ही भारतीय रजवाड़ों से व्यापार और सैनिक सत्ता में आगे निकल गईं। इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के क्षेत्रीय लाभ ने मुगल साम्राज्य के पुनरुत्थान की सभी संभावनाओं को खत्म कर दिया। अंग्रेजों ने प्लासी की लड़ाई जीती साथ ही दक्कन और गंगा क्षेत्र में अपने साम्राज्य को बिस्तर से ज़्यादा फैलाया।

में सक्षम हो गए और मुगल साम्राज्य के पुनरुत्थान के लिए कोई मौका नहीं छोड़ा।

1.2.9. नयी शक्तियों का उत्थान

पंजाब में सिक्ख, राजपूताना में राजपूत, रुहेलखण्ड में रुहेला सरदार तथा आगरा एवं मथुरा में जाट अधिक शक्तिशाली हो गए थे। बंगाल, अवध और हैदराबाद ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा पहले ही कर दी थी।



1.3 मुगलों के पतन के क्या परिणाम हुए ?

- ब्रिटिश शासन के लिए भारत के द्वार खुल गए।
- भारतीयों को एकसूत्र में बाँधने वाली कोई प्रणाली नहीं रही।
- ऐसी कोई ताकत नहीं रही जो पश्चिम से आने वाली शक्तियों से लड़ सके।
- स्थानीय राजनीतिक और आर्थिक शक्तियाँ अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने लगीं।
- कई रियासतें स्वतंत्र हो गयीं, जैसे कि बंगाल, अवध और हैदराबाद आदि।

1.4 निष्कर्ष

समग्रतः यह निष्कर्ष निकलता है कि मुगल साम्राज्य का पतन और विघटन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा संगठनात्मक कारणों से हुआ। अकबर की नीतियों से विघटन के तत्वों पर कुछ समय तक प्रभावशाली नियंत्रण रखा जा सका, लेकिन समाज व्यवस्था में कोई मूलभूत परिवर्तन कर पाना अत्यधिक जटिल था। जब तक औरंगज़ेब ने सिंहासन संभाला, विघटन की सामाजिक और आर्थिक शक्तियाँ अधिक शक्तिशाली हो चुकी थीं। इस व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन करने के लिए औरंगज़ेब में राजनीतिक योग्यता और दूरदर्शिता दोनों की कमी थी। वह ऐसी नीतियों के पालन में भी असमर्थ रहा, जिनसे परस्पर विरोधी तत्वों पर कुछ समय के लिए रोक लगाई जा सकती थी। इस प्रकार औरंगज़ेब न केवल परिस्थितियों का शिकार था, बल्कि उसने स्वयं ऐसी परिस्थितियों को जन्म देने में योगदान दिया जिनका वह स्वयं शिकार बना।

2. क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

2.1 पृष्ठभूमि

- 1761 तक, मुगल साम्राज्य केवल नाममात्र के लिए साम्राज्य रह गया था, क्योंकि इसकी कमजोरियों ने स्थानीय शक्तियों को स्वतंत्र होने का अवसर प्रदान किया। फिर भी, मुगल सम्राट की प्रतीकात्मक सत्ता बनी रही, क्योंकि उन्हें अभी भी राजनीतिक वैधता का स्रोत माना जाता था।
- नए राज्यों ने प्रत्यक्ष रूप से मुगल अधिकार को चुनौती नहीं दी तथा अपने शासन को वैधता प्रदान करने हेतु लगातार उनका अनुमोदन प्राप्त करते रहे। इसलिए, अठारहवीं शताब्दी में इन राज्यों के उद्भव ने राजनीतिक पतन के बजाय एक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व किया। इसने शक्ति शून्यता अथवा राजनीतिक अराजकता की स्थिति को उत्पन्न करने के बजाय शक्ति का विकेंद्रीकरण किया।
- बंगाल, अवध और हैदराबाद जैसे कुछ राज्यों को 'उत्तराधिकार राज्य' के रूप में देखा जा सकता है, जो केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने के साथ मुगल प्रांतों के सूबेदारों द्वारा स्वायत्तता के प्रयासों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए थे।
- अन्य राज्य जैसे कि मराठा, अफगान, जाट और पंजाब आदि मुगल अधिकारियों के विरुद्ध स्थानीय सरदार, जमींदार और किसानों द्वारा किए गए विद्रोहों से उत्पन्न हुए थे। इन्हें 'विद्रोही राज्य' की संज्ञा दी गयी। ये राज्य राजनीतिक और स्थानीय परिस्थितियों में एक दूसरे से काफी भिन्न थे।
- उत्तराधिकारी राज्यों और विद्रोही राज्यों के अतिरिक्त, राजपूत क्षेत्रों, मैसूर और त्रावणकोर जैसी कुछ रियासतें भी थीं, जो पहले से ही बहुत स्वायत्त थीं और अब अठारहवीं सदी में पूरी तरह से स्वतंत्र हो गयी थीं।

2.2 क्षेत्रीय शक्तियाँ



2.2.1 बंगाल

- 1717 में बंगाल में मुर्शीद कुली खाँ की नियुक्ति, इस सूबे की स्वायत्तता का वाहक बनी। इसे औरंगजेब द्वारा प्रारंभ में राजस्व प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए बंगाल का दीवान (राजस्व-संग्राहक) नियुक्त किया गया था।
- तत्पश्चात् 1710 में दो साल के छोटे अंतराल के बाद बहादुरशाह ने उसे उसी पद पर पुनः नियुक्त किया। जब फर्रुखसियर बादशाह बना तो उसने इस पद पर मुर्शीद कुली खाँ की नियुक्ति को स्थायी कर दिया और साथ ही उसे बंगाल का नायब सूबेदार और उड़ीसा का सूबेदार भी बना दिया।
- आगे चलकर 1717 में उसे जब बंगाल का नाजिम (सूबेदार) बना दिया गया तो उसे एक ही साथ नाजिम और दीवान जैसे दो पद सँभालने का अभूतपूर्व विशेषाधिकार मिल गया। नियंत्रण और संतुलन की जिस व्यवस्था द्वारा साम्राज्य के इन दोनों अधिकारियों को अंकुश में रखने के लिए पूरे मुगलकाल में शक्ति का जो विभाजन जारी रखा गया था, उसी को अब इस तरह समाप्त कर दिया गया।
- इससे मुर्शीद कुली खाँ, जो अपने सुदृढ़ राजस्व-प्रशासन के लिए जाना जाता था, को अपनी स्थिति को और मजबूत करने में सहायता मिली। इस प्रकार उसने औपचारिक रूप से मुगलों की सत्ता की अवज्ञा नहीं की तथा सदैव शाही खजाने को राजस्व भेजता रहा।
- मुर्शीद कुली ने अपने प्रत्येक राजस्वदायी क्षेत्र का एक विस्तृत सर्वेक्षण कराने के लिए अपने अन्वेषक (Investigators) भेजे तथा जमींदारों को समय पर पूर्ण राजस्व चुकाने हेतु विवश किया।
- इसके लिए उसने छोटी-छोटी कुप्रबंधित जमींदारियों के स्थान पर अपेक्षाकृत कम शक्तिशाली जमींदारियों के विकास को बढ़ावा दिया जबकि शोषणकारी जमींदारों को दंडित किया गया। साथ ही कुछ जागीरदारों को दूरस्थ प्रांत उड़ीसा भेजकर उनकी जागीरों को खालिसा (शाही भूमि) में परिवर्तित कर दिया गया।
- इस प्रकार 1717 से 1726 तक के काल में कम संख्या में बड़े भूपतियों (Landed magnates) का उदय हुआ। ये भूपति समय पर मालगुजारी की वसूली में नाजिम की सहायता करते थे। इन्होंने उसके संरक्षण में अपनी सम्पत्तियों को भी बढ़ाया।
- बंगाल का व्यापार हमेशा से लाभदायी था और मुर्शीद कुली के काल में राजनीतिक स्थिरता और खेतिहर उत्पादकता की वृद्धि ने ऐसे व्यापारिक कार्य को और बढ़ावा दिया।
- सत्रहवीं सदी में बंगाल से रेशमी एवं सूती अस्त्र, चीनी और तेल आदि उत्तरी और पश्चिमी भारत के अनेक वितरण केंद्रों से होते हुए स्थल-मार्ग से फारस तथा अफगानिस्तान भेजे जाते थे। इसी प्रकार हुगली बंदरगाह से होकर समुद्री मार्ग के रास्ते दक्षिण-पूर्व एशिया फारस की खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों तक जाते थे।
- बंगाल का व्यापार-संतुलन सदैव उसके अनुकूल रहा था, क्योंकि बंगाल का माल खरीदने यूरोप की

Bullion) लेकर आती थीं। क्राफ्टिन्कीभलेकीधूसुरँ (आधारित

अर्थव्यवस्था और राजस्व ढाँचे में आसानी से शामिल कर लिया जाता था।

- 1726 ई. में मुर्शीद कुली खाँ की मृत्यु के बाद उसके दामाद शुजाउद्दीन ने 1727 से 1739 तक बंगाल पर शासन किया। 1739 में शुजाउद्दीन की मृत्यु के बाद सरफराज खाँ ने सत्ता को अपने कब्जे में कर लिया।
- 1741 में बिहार के नायब सूबेदार अलीवर्दी खाँ ने बिहार तथा उड़ीसा के नायब सरफराज खाँ को गिरिया के युद्ध में पराजित कर बंगाल का नवाब बन गया।

- अलीवर्दी खाँ की 1756 में मृत्यु हो गई, उसने अपने उत्तराधिकारी के रूप में सिराजुद्दौला को नामांकित किया था। लेकिन राजगद्दी के लिए अन्य दावेदारों द्वारा चुनौती दिए जाने के कारण दरबार में गुटबंदी प्रारंभ हो गई। शक्तिशाली जमींदारों और वाणिज्यिक साहूकारों को एक अत्यंत महत्वाकांक्षी नवाब सिराजुद्दौला से खतरा महसूस होने लगा था।
- इससे बंगाल का प्रशासन अस्थिर हो गया जिसका लाभ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने उठाया, जिसे हम बंगाल में 1757 के 'प्लासी षडयंत्र' के रूप में जानते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सिराज-उद-दौला का शासन समाप्त हो गया। (इसे बाद के खंडों में विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है।)



2.2.2 अवध

- अवध प्रांत पश्चिम में कन्नौज जिले से पूर्व में कर्मनाशा नदी तक विस्तृत था।
- 1722 में सआदत खाँ को सूबेदार नियुक्त किए जाने के साथ ही अवध लगभग स्वतंत्र हो गया था। वह अराजकता को समाप्त करने और बड़े जमींदारों को अनुशासित करने में सफल रहा। उसने एक नयी राजस्व व्यवस्था भी लागू की जिससे उसके साम्राज्य के वित्तीय संसाधनों में वृद्धि हुई।
- सआदत खाँ का उत्तराधिकारी उसका भतीजा सफदरजंग बना, जिसे 1748 में साम्राज्य के वजीर के रूप में नियुक्त किया गया साथ ही उसे इलाहाबाद प्रांत की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी सौंपी गयी।
- 1753 में उत्तर भारत के राजनीतिक इतिहास में महत्वपूर्ण बदलाव दृष्टिगोचर हुआ जब अवध और इलाहाबाद क्षीण हो रहे साम्राज्य से स्पष्ट रूप से स्वतंत्र होते प्रतीत होने लगे।
- सफदरजंग की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शुजाउद्दौला को अवध का सूबेदार नियुक्त किया गया। जब अफगान नेता अहमद शाह अब्दाली ने पानीपत के तृतीय युद्ध (1761) में मराठों से युद्ध हेतु पुनः भारत में आया, उस समय शुजाउद्दौला अपने स्थानीय विरोधियों एवं मराठों को कमजोर करने के लिए अफगान आक्रमणकर्ताओं का साथ दिया।
- उसके अपने क्षेत्र अवध और इलाहाबाद में उसकी स्वायत्तता और शक्ति 1764 में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ युद्ध तक बनी रही। अंग्रेजों और बंगाल के पदच्युत नवाब, मीर कासिम के बीच हुए बक्सर के युद्ध (1764) में शुजाउद्दौला ने भी भाग लिया। इस युद्ध में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। (बाद के खंडों में इसका विस्तृत विवरण दिया जाएगा।)

2.2.3 हैदराबाद और कर्नाटक

- हैदराबाद के स्वायत्त राज्य की स्थापना 1724 में शाही दरबार के शक्तिशाली अभिजात वर्ग के सदस्य, चिन किलिच खान ने की थी। उसने निजाम-उल-मुल्क आसफ जाह की उपाधि धारण की यद्यपि उसने कभी भी सार्वजनिक रूप से केन्द्रीय सत्ता से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा नहीं की, लेकिन व्यवहार में उसने एक स्वतंत्र शासक की तरह कार्य किया।
- उसने उद्दंड जमींदारों को दण्डित किया और उन हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता दिखायी जो आर्थिक रूप से समृद्ध थे, परिणामस्वरूप, हैदराबाद में एक नए क्षेत्रीय अभिजात वर्ग का उदय हुआ जो -राजस्वनिष्ठाओं के समर्थन से शासक की सत्ता को मजबूत किया।
- कर्नाटक मुगलों के दक्कनी सूबों में से एक था और हैदराबाद के निजाम के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता था। लेकिन जैसे व्यवहार में निजाम, दिल्ली से स्वतंत्र हो गया था, ठीक उसी तरह कर्नाटक के उप-गवर्नर जिसे कर्नाटक के नवाब के रूप में भी जाना जाता था, ने स्वयं को दक्कन के वायसराय के नियंत्रण से मुक्त कर लिया था।
- 1740 के बाद, कर्नाटक के नवाब के पद पर अधिकार के लिए हुए बार-बार के संघर्ष के कारण स्थिति बिगड़ गई और इसने यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों को प्रत्यक्ष रूप से भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करने का अवसर प्रदान किया।